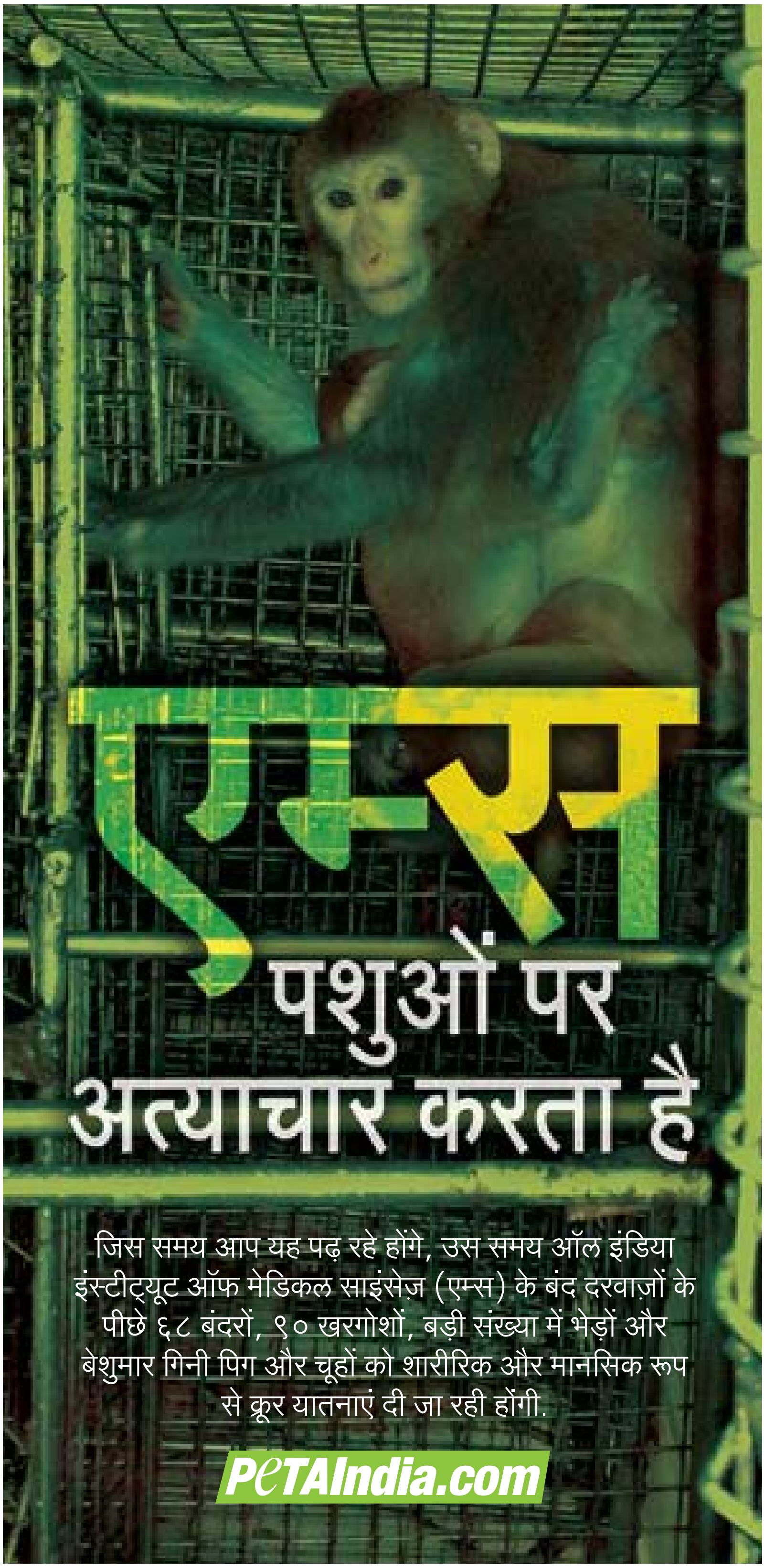
एम्स
पशुओं पर
अत्याचार करता है
जिस समय आप यह पढ़ रहे होंगे, उस समय ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज़ (एम्स) के बंद दरवाज़ों के पीछे ६८ बंदरों, ९० खरगोशों, बड़ी संख्या में भेड़ों और बेशुमार गिनी पिग और चूहों को शारीरिक और मानसिक रूप से क्रूर यातनाएं दी जा रही होंगी.
PETAIndia.com

हाल के एक समाचार रिपोर्ट के अनुसार एक खोजी पत्रकार ने एम्स के सेंट्रल ऍनिमल हाउस में पशुओं पर निम्नलिखित अत्याचारों का खुलासा किया:

- बंदरों को–जिनमें मां से अलग किया गया एक डरा हुआ नवजात शिशु भी था– अकेले अत्यन्त छोटे, सूने और ज़ंग लगे पिंजरों में कैद रखा गया था.
- खरगोशों को तार पर बैठने के लिए मजबूर किया गया था और चूहे गंदे, बदबूदार और बेहद भीड़ भरी स्थितियों में रह रहे थे.
- कर्मचारी बंदरों का मखौल उड़ाते थे और चूहों को शारीरिक यातना देते थे.
- बीमार और मृतप्राय पशुओं को बिना इलाज छोड़ दिया गया था, जिनमें वो खरगोश भी थे जिन्हें त्वचा का संक्रामक रोग था, वे गिनी पिग थे जो अंधे थे और एक गिनी पिग की आंखें ज़ख्मी और खूनआलूदा थीं.
- चूहे और बंदर अकेलेपन से जूझते, उब जाते, कुंठित और तनावग्रस्त अवस्था में अपने छोटे से पिंजरों में अंतहीन ढंग से चक्कर लगाते हैं (इनमें से कई यहां २० साल से हैं).

सरकार से इस सुविधा को बंद कर देने का पीटा का बार–बार किया गया अनुरोध अनसुना रह गया. आज भी एम्स आपके खून पसीने की कमाई खर्च कर पशुओं के साथ क्रूर व्यवहार कर रहा है..

आप क्या कर सकते हैं

कृपया अभी कार्रवाई कीजिये. अधिकारियों से एम्स के सेंट्रल ऍनिमल हाउस बंद करने का अनुरोध करें, सभी जानवरों के पुनर्वास और पुनर्स्थापना करायें और पशुओं पर अत्याचार करने वाले कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करें:

सीपीसीएसईए अध्यक्ष
अतिरिक्त सचिव
भारत सरकार
पर्यावरण व वन मंत्रालय
पर्यावरण भवन, सीजीओ कॉम्प्लैक्स
लोधी रोड, नई दिल्ली–११०००३
parshara-mef@nic.in
cpcsea@yahoo.co.in

अधिक जानकारी के लिए व एम्स अन्वेषण के और फुटेज के लिए कृपया देखें
www.PETAIndia.com/aiims

''ये छोटे जानवर हैं, अगर ये मर भी जाते हैं तो कोई फर्क नहीं पड़ता.''

– एम्स का प्रयोगशाला सहायक

12/08